International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 8, August 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

पंचतंत्र में स्त्री

डॉ॰ अर्चना गौड़
एसो सएट प्रोफ़ेसर,
हिंदी वभाग, रामलाल आनंद कॉलेज
दिल्ली वश्व वद्यालय

भारतीय संस्कृति में शव लंग की आराधना सृष्टि सृजन का द्योतक है। संपूर्ण ब्रह्मांड का सर्वशक्ति मान स्वरूप सृजन है , इस सृजन शक्ति को बिना योग से पूर्ण नहीं कया जा सकता। योग का ये प्रतीक शव लंग शव तत्त्व से अर्थात् कल्याणकारी स्वरूप से जुड़ता है। धर्माडंबरों के वशीभूत शायद भावी पीढ़ी को भी ये ज्ञान-स्व अर्चन भाव रूप में देने की असमर्थता वर्तमान पीढ़ी पर रही है , जिस प्रकार सृजन का आधार योग है, और एकात्मक वृत्ति अपनी सार्थकता और संपूर्णता खो बैठती है उसी प्रकार स्त्रीत्व और पुरुषत्व के योग से ही इस धरती पर मानव जीवन की निरंतरता बनी हुई है। नारी प्रतीक है कोमलोद्गार की तो पुरुष अग्नि की चंगारी सा दैदिप्यमान है। दोनों के योग में नारी की स्थिति अ धक करुणामयी, ममतामयी, शांत सम र्पत, त्यागमयी है। पारिवारिक स्तर पर भी यदि कुछ अपवाद को छोड़ दिया जाए तो उनका संयुक्त स्वरूप नारी की भू मका का ही अ धकार कहा जा सकता है वशेषतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में। यद्य प स्त्री का महत्त्व इस बात में भी है क वैदिक ऋ षयों के साथ अनेक स्त्रियाँ भी मंत्र द्रष्टा थी। मैत्री , गार्गी जैसी दार्शनिक भी थीं , लक्ष्मीबाई जैसी योद्धा और जीजाबाई जैसी माँ भी थी। वास्तव में स्त्री प्रकृति की अनुपम सृष्टि मानी गई है। आधुनिक युग के वद्वानों ने भी स्त्री की उसी तेवर से प्रशंसा की है। इस संबंध में 'नारी' नामक काव्य कृति की भू मका में अ भव्यक्त श्री अतुलकृष्ण गोस्वामी के भाव उद्धृत हैं –

"नारी की वराट 'निजत्व' अनिर्वचनीय माधुर्य, आनंद, सौंदर्य और संगीत का एक एकांत आश्रय है। उसमें सत्य शव सुन्दर समस्त सुकुमार तत्त्वों और सर्वोत्तम सत्वों का संयोग है। मानव जगत् के त्रिकालीय कला गुरुओं और तत्त्व मनी षयों द्वारा साहित्य और दर्शन की हेम-मंजूषा में नारी तत्त्व नि धयों और तथ्य चंताम ण का अपूर्व संग्रह हुआ है।"[i]

शास्त्रों और धर्मग्रंथों में नारी की प्रशंसा होते हुए भी व्यवहार के रूप में नारी का सुख सौभाग्य उतना देखने में नहीं आता जितना पुस्तकों में व र्णत कया गया हे , वह सदैव पुरुष की अनुगा मनी के रूप में जानी जाती रही है। पत्नी का जीवन घर की चारदीवारी के घेरे में घूमता रहा है , वह प्रता ड़त हुई है, अपमानित हुई है, लज्जित हुई है और एक वस्तु की तरह भोग्य रही है। महाभारत की द्रौपदी और दमयन्ती आदि स्त्रियाँ तो इसके उदाहरण हैं ही। परवर्ती समाज में भी नारी की प्रताड़ना के अनेक

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

उदाहरण मलते हैं। ये प्रता ड़त भाव स्पष्ट रूप से दर्ज-दजावेज़ों के रूप में नहीं मलते कंतु ववेचनात्मक-अवलोकन में अवश्य परिल क्षत होते हैं। इसी क्रम में यदि पंचतंत्र को उठाया जाए जिसे लौ कक-व्यवहार का संपूर्ण ग्रंथ माना जाता रहा है , जो नीतिगत शास्त्र का पूर्ण स्वरूप माना जाता रहा है, ऐसे 'पंचतंत्र' के पाँचों तंत्रों में स्त्री दशा केा कस रूप में रखा गया है? इस वचारणीय प्रश्न को पंचतंत्र के दूसरे अध्याय ' मत्रसंप्राप्ति' के आधार पर बात करते हुए ये कहना अनु चत न होगा क स्त्री की पूर्ण अवहेलना इस लोक-व्यवहार स्तुति ग्रंथ में अनायास ही दिख पड़ती है। प्रोफेसर कृष्णदत्त शर्मा के शब्दों में - "इन स्त्री केंद्रित कहानियों में प्रायः स्त्रियों के स्वच्छंद यौन-व्यवहार का चत्रण है। इसमें स्त्रियाँ प्रबल और पुरुष दब्बू दिखाए गए हैं। "[ii] स्त्रियों के ऐसे चत्रित रूप के साथ-साथ कौटिल्य ने शक्षा भी दी है और ये भी माना क शास्त्री यदि लोकज्ञ न हो तो उसकी गणना मूर्खों की कोटि में होती है। लौ कक-व्यवहार ज्ञान का ऐसा पक्ष जहाँ स्त्रियों की छ व का वकृत स्वरूप प्रस्तुत कया जाए तो लौ कक-संसार को सही रूप में कोई भी जान पाने में असमर्थ है। इस संदर्भ में ये उदाहरण द्रष्टव्य है -

कं वया क्रयते लक्षम्या वा मधूरित केवला।

या न वेश्वेव सामान्य प थकैः उप भज्यते।।[iii]

अर्थात् "ऐसी लक्ष्मी से क्या लाभ जो कुलवधु की तरह केवल एक ही व्यक्ति की उपभोग्या बन कर रह जाए और वेश्या की तरह सामान्य प थकों के उपभोग में न आ सके।" यहाँ धन- वभाजन के प्रसंग में इस उक्ति को कहा गया है यदि राजकुमारों का लोकज्ञ-निपुण बनाने के लए उदाहरण की आवश्यकता ही रही होगी ऐसा मान लया जाए तो ऐसे प्रसंगों के लए प्रकृति में कई उदाहरण सहज ही मल सकते हैं , ले कन स्त्री को प्रतीक बनाकर ऐसे उदाहरण देकर कस भारतीय संस्कृति की अवहेलना की जा रही है। मातृत्व के भाव से ओत-प्रोत जननी , भार्या, बहन इन सभी को धर्मशास्त्र ने जिस प्रशंसनीय उक्ति से सुशो भत कया -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमत्ते तत्रदेवताः।"[iv]

उसकी धज्जियाँ उड़ती दिखाई देती हैं। पुरुष के लए स्त्री मात्र भोग्य वस्तु है नीरे धन की तरह, ' वष्णु रूपी जुलाहा और राजकन्या ' कहानी के अंतर्गत आए प्रसंग में एक राजा जो राजकुमारी का पता है, उसकी चंता का सूचक-रूप दिखाया गया है , "कन्या का होना ही कष्ट का दूसरा नाम है। '' ऐसे नीतिशास्त्र का बोध जिस समाज को हो जाए वहाँ कन्या भ्रूण हत्याएँ तो सामान्य बात मान ली जाएगी।

"दूती, सयार और आषाढ़भूति" कहानी में स्त्री के दोषों पर परिचर्चा करते हुए कहा गया है -

अनृतं साहसं माया मूर्खत्वं अतिलोभता।

अशौचं निर्दयत्वं च स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः।।[v]

अर्थात् असत्य, साहस, भाया, मूर्खता, अतिलोभ, अप वत्रता और निर्दयता - ये स्त्रियों के स्वाभा वक दोष माने गए हैं।

स्त्री का असत्यवादी होना लौ कक-व्यवहार में सामान्य बात मानी जाती रही है - क्या ये वष्णुगुप्त के लोक-व्यवहार ज्ञान के कारण प्रबल हो चला है या स्त्रियों के मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ चला या स्त्रियाँ कोमला हृदया स्त्रियाँ 'प्रय बुर्यात् सत्यं वुर्यात न बुर्यात अ प्रयं सत्यं ' की नीतिगत शक्षा का संरक्षण करती है जिस सत्य को कहने से अ प्रय लगे उस सत्य को मन में रख लेना अ धक व्यावहारिक माना गया है कंतु स्त्रियाँ असत्य कहती हैं ये इतना आवश्यक और सत्य मान लया गया है क आज भी सामान्य स्त्री-वक्ता पर प्रश्न चह्न लगाए जाते हैं। ऐसे असत्य जो परिवार के हित के लए कहे जाएं और जिससे कसी का बुरा न होता हो तो कोई भी ऐसा असत्य कहने के लए स्वतंत्र है। दोपहर का भोजन कहानी में सद्धेश्वरी के असत्य को कस कोटि में रखा जाएगा? कष्ट का प्रश्न ये है क सद्धेश्वरी के ऐसे झूठ को साहित्यकारों ने कसी श्रेणी में नहीं रखा है। ऐसी कहानी के नारी-पात्रों पर वशेष दृष्टि न रखकर कहानी त्रासदी और वभी षका की कहानी बनकर सामने आती है। इन्द्र द्वारा अहिल्या से व्य भचार झूठ के पक्ष पर हुआ तब पुरुष असत्य दोष को उजागर नहीं कया जाता ऐसी पक्षपात मान सकता के समाज में स्त्री का मृदु हृदय असज हो जाना स्वाभा वक ही है। पंचतंत्र के ऐसे लौ कक-व्यवहार में यदि स्त्री के ऐसे कुत्सित स्वरूप को वष्णुगुप्त रखते हैं स्त्री-सौंदर्य का समाज-बोध स्वतः ही कुंठित हो जाता है। जिस स्त्री को इस देश में देवी तुल्य माना गया , कन्या-पूजन आज भी प्रच लत है। दुर्गा सप्तशती का पाठ कया जाता रहा है वहाँ साहस को दोष के रूप में इं गत कया गया है। अपने साहस का परिचय वह गुन्जन वर्मा के रूप में देती है , सामाजिक हैरान होता है, गौरवान्वित नहीं। स्त्री को प्रेम की प्रतिमूर्ति है इस सत्य से मुँह मोड़ लेना असहज है। आतिथ्य का जीता-जागता रूप भारतीय संस्कृति की पहचान है। भोजन की व्यवस्था आज भी स्त्री का प्रथम कर्त्तव्य माना जाता है बदलाव के इस दौर में हाथ-बंटाना भले ही चलन में आ गया है परंतु इसे कतने प्रतिशत तक माना जा सकता है। वहाँ स्त्री के दोषों में निर्दयता को समाहित कर लेना निरर्थक लगता है। घर की साज-सज्जा में निपुण स्त्रियों को अ पवत्र मान उनकी अवहेलना करना नहीं तो कम से कम सार्थक भी नहीं कहा जा सकता है।

'दंतिल और गोरंभ' कहानी के प्रसंग में वष्णु गुप्त कहते हैं -

"नाग्निः तृप्याति काष्ठानां नापगानां महोद धः।

नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचनाः।।"[vi]

अर्थात् जैसे आग लक ड़यों से, समुद्र नदियों से और काल प्रा णयों से कभी तृप्त नहीं होता उसी प्रकार स्त्री कभी पुरुषों से तृप्त नहीं होती। ववाह-संस्कार की पारिवारिक व्यवस्था को संभाले रखने का दायित्व स्त्री-पुरुष दोनों का सामान रूप से है, कंतु समय के बदलाव के साथ-साथ भले ही वह खूंटे से बंधी गाय न रही हो पर प्रेम और ववाह-संस्कार की मर्यादा वह बखूबी जानती है। पुनर्जागरण काल के समाज-सुधारकों ने स्त्री सुधार में प्रशंसनीय योगदान दिया।

राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, दयानंद सरस्तवी आदि ने नारियों को जागृत करने की प्रशंसनीय चेष्टा की। महात्मा गांधी ने राजनीति के क्षेत्र में नारियों का प्रवेश करा कर उनका महत्त्व बढ़ाया। अंग्रेज़ी शक्षा के प्रसार और पाश्चात्य वचारकों की दृष्टि से भारतीय नारी के जीवन में जागृति आई, बदलाव आया। वह घर की घुटन, चारदीवारी से बाहर निकली और पुरुषों के कंधों से कंधा मल कर आगे बढ़ी। उसने परिवार और नौकरी के दायित्व को निभाया। स्त्री जगत का मनोबल बहुत ऊँचा हुआ और चरकाल से दबी उसकी क्षमता प्रकाश में आई। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह बराबरी की सहभा गनी है।

सातवें दशक तक नारी जागृति जीवन के अनेक पक्षों में प्रकृति लेकर आई। उसकी कुछ सीमाएँ भी हैं, आज नारी अनमेल ववाह में पसने को तैयार नहीं, प्रतिकूल पति के साथ जीवन यापन करने को बाध्य नहीं, वह प्रेम करने में भी स्वतंत्र है। पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग कर वह प्रेम और ववाह को अलग मानती है। इस तरह का वचार 'हरिकृष्ण प्रमी' के एक नाटक में मलता है।

"जीवन में यह सदा संभव नहीं होता क जिसे प्यार कया जाये उससे ववाह भी हो जाये और जिससे ववाह कया जाये उससे संपूर्ण हृदय से प्यार भी संभव हो जाये।"[vii]

आज की नारी पुरुषों के अधीन नहीं। वह रीति-रिवाज और परंपरा में अपने को ववशता से नहीं बांधती शक्षा ने उसका महत्त्वाकांक्षी बनाया है। जाति और धर्म के घेरे से बाहर निकली है, उन्होंने ववाह से अ धक प्रेम को मूल्य देना शुरू कया है, वद्वानों की सम्मति में - "समाज में ऐसी नारियाँ देखी जाती है जिन्होंने अपने प्रेम को जी वत रखने के नि मत्त सामाजिक नियमों को तोड़ा है और सामाजिक रीति-रिवाजों के वरुद्ध वैवाहिक संबंध स्था पत कया है।"[viii]

यदि प्रेम और ववाह की मर्यादा स्त्री नहीं जानती और एक पुरुष से मन न भरने की बात को लोकज्ञ-समाज में अपने उदाहरण से प्रस्तुत करते हैं तो प्रेम-ववाह के 'ऑनर क लंग' जैसे ख़तरों से खेलते हुए, स्त्री प्रेम-ववाह की भागीदारी कभी नहीं स्वीकारती। स्त्री के जिस स्वरूप को वष्णु गुप्त पंचतंत्र में कह गए हैं, भले ही उदाहरणों के माध्यमों का प्रयोग करके वह स्त्री-अस्मिता पर वज्र-प्रहार है। भारतीय संस्कृति के वरुद्ध है। वेश्यालयों का प्रचलन सदा चलता चला आया है। ववाह संस्कार में सात वचन भरती चली आ रही है जब क शवपुराण साक्षी है क पार्वती ने भी शव से सात वचन भरवाए थे उन सात वचनों का कहीं कोई ज़िक्र परंपराओं में नहीं मलता। सत्य तो ये है क "जिसे आज 'स्त्री का स्वभाव' कहा जाता है वह एक नकली चीज़ है, और कुछ दिशाओं में बाध्यतापूर्ण दमन और कुछ दिशाओं में अप्राकृतिक फैलाव का परिणाम है।"[ix] जिसे निरंतर द मत इच्छाओं के साथ पुरुषवादी मान सकता से पो षत कया गया हो उसके संपूर्ण वकास का प्रश्न ही नहीं उठता। समय की धारा में जिस बदलाव की गंध से स्त्री परि चत हो रही है। उसके लौ कक-

व्यवहार के शास्त्री वष्णुगुप्त स्त्री का ऐसा चत्रण कर छोड़ कर गए हैं , उससे भी उपहासप्रद यह है क वद्वानों ने इसे बाल-मनोरंजक शास्त्र मान कर खेल-खेल में बालकों को थमा दिया है। स्त्री वमर्श की दृष्टि से इस नीतिशास्त्र और लोकशास्त्र की पुनर्पठन की अनिवार्यतः आज के समय में दिखाई पड़ती है।

---

[i] नारी - अुतल कृष्ण गोस्वा मीप्राक्केथन, पृष्ठप-क

[ii] पंचतंत्र - मानव जीवन का ज्ञान कोष, कृष्ण दत्त् शर्मा, पृष्ठप-21

[iii] पंचतंत्र - वष्णुकगुप्ता

[iv] मनुस्मृरति

[v] पंचतंत्र - वष्णुषगुप्तु

[vi] वही

[vii] ममता - हरिकृष्णण प्रेमी , पृष्ठृ-59-60

[viii] साहित्यर में नारी व वध संदर्भ - डॉ ॰ रामेश्वदर नारायण रमेश, पृठ-11

[ix] **The Subject of Women :** जान स्टुपअर्ट मल